संपादक का नोट

मैं आप सभी को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम से अभिवादन करती हूं।

हर परिस्थिति में, जब हम परमेश्वर की सच्चाई को समझेंगे तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। कई लोग स्थिति को जानते हैं, लेकिन भीतर के सत्य को नहीं जानते हैं।

वे नूह की कहानी के बारे में जानते हैं। वे याकूब की कहानी जानते हैं। वे अब्राहम की कहानी जानते हैं। उन्हें दाऊद की कहानी के बारे में भी पता है। लेकिन वे वचन या वचन के सामर्थ को नहीं जानते हैं।

प्रभु ने बुद्धिमानों को शर्मसार करने के लिए दुनिया के मूर्खतापूर्ण चीजों को चुना है, और प्रभु ने दुनिया के कमजोर चीजों को चुना है ताकि बलवानों को शर्मसार कर सके।

जब गिदोन को लगा कि वह शक्तिहीन है और भयभीत है, तो यहोवा ने उसे पुकारकर कहा न्यायियों 6:12 ''उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।''

जब प्रभु ने उसे शूरवीर सूरमा कहा, तो गिदोन इधर–उधर देख रहा था। प्रभु ने उससे कहा 'तुम ही हो।'

बाइबल में हम देखते हैं कि प्रत्येक चुने हुए व्यक्ति महान शक्तिशाली व्यक्ति नहीं थे, बुद्धिमान नहीं थे, समझदार नहीं थे। प्रभु ने उनसे मिलने के बाद उनके जीवन को छुआ और उन्हें विश्वास, भरोसा और ज्ञान दिया और उन्हें नया व्यक्ति बनाया।

प्रभु ने कई लोगों से मुलाकात की और बुरे गुणों वाले लोगों के जीवन को बदल दिया। शाऊल क्या कर रहा था? प्रेरितों के काम 9: 1–2 ''1 और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। 2 और उस से दमिश्क की अराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्ध कर यरूशलेम में ले आए।''

शाऊल चेलों को मारने की धमकी दे रहा था और इस तरह सभाओं को तोड़ रहा था। उस समय यहोवा ने उससे मुलाकात की और उसे सभाओं के तोड़नेवाले से लेकर सभाओं के निर्माता तक बदल दिया। उसने शाऊल को पौलुस में बदल दिया। अब पौलुस कह रहा है 1 तीमुथियुस 6:

5–11 ''5 और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है। 6 पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। 7 क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। 8 और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। 9 पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। 10 क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटक कर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है। 11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर।''

जब प्रभु एक व्यक्ति को बदलते है तो हम उसे पहचान नहीं पाएंगे। यदि परमेश्वर का वचन आप के भीतर आता है, तो वह आपको एक नया व्यक्ति बना देगा। प्रभु के वचन पर अपना ध्यान रखें। यहोशू 1: 8 ''व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।''

प्रभु आप सभी को आशीर्वाद दें, जब तक हम फिर से मिले।

हमारे प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म।

अपने दिलों को कठोर मत करो!

प्रकाशितवाक्य 16: 15 ''देख, मैं चोर की नाईं आता हूं; धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र कि चौकसी करता है, कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें।'' परमेश्वर ने आदम और हव्वा को 'ज्ञान के वृक्ष' का फल न खाने की आज्ञा दी थी, लेकिन जब उन्होंने प्रभु की आज्ञा न मानी और इस वृक्ष के फल को खा लिया, तो उन्होंने अपने वस्त्र खो दिए। वे उनका नंगापन देख सकते थे। इसलिए, प्रभु ने एक जानवर की बलि दी और उन्हें जानवर की खाल पहनाई, इस तरह उनकी नग्नता को ढंक दिया। उसी प्रभु ने कलवारी के क्रूस पर अपने प्राणों का बलिदान देकर आज हमारी नग्नता को ढँक दिया है। इस प्रकार, प्रभु ने हमें 'धार्मिकता' के कपड़े दिए है। आइए हम पढ़ते है यशायाह 61: 10 ''मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।'' हमें 'धार्मिकता' के कपड़ों को नहीं खोना चाहिए। वचन कहता है प्रकाशितवाक्य 16 : 15 ''देख, मैं चोर की नाईं आता हूं; धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र कि चौकसी करता है, कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें।'' यह एक जानने वाला सत्य है कि चोर हमें नग्न करने के लिए आता है। इस प्रकार, हमें हमेशा उस धार्मिकता के कपड़ों की रक्षा करनी चाहिए जो प्रभु ने हमें हमारे नग्नता को ढंकने के लिए दिया है। हम जानते हैं कि अंत समय निकट और निकट हो रहा है, प्रभु कभी भी आएंगे। लेकिन, जब वह आएंगे, तो वह हमें नग्न नहीं पाना चाहिए, बल्कि वह हमें धार्मिकता के कपड़े पहने देखना चाहिए। आदम और हव्वा को इस बात का एहसास नहीं हुआ कि कब उन्होंने अपने कपड़े खो दिए जिससे प्रभु ने उन्हें ढंका था और उन्होंने खुद को नग्न पाया। जब उन्होंने बगीचे में प्रभु की आवाज़ सुनी, तो उन्हें एहसास हुआ कि वे नग्न हैं। हमें अपने जीवन में आदम और हव्वा के समान स्थिति में नहीं होना चाहिए। परमेश्वर हमसे कहते है कि ''मैं आधी रात को एक चोर के रूप में आऊँगा, इस प्रकार यह सुनिश्चित करना चाहिए कि धार्मिकता का वस्त्र तुम पर ढंका हो''। आइए पढ़ें प्रकाशितवाक्य 19: 8 ''और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।'' यह केवल धार्मिकता के हमारे कपड़े हैं जो हमें बचा सकते हैं। परमेश्वर ने हमें उनके बच्चों के रूप में चुना है और हमें राजा और याजक बनाया है। हमारी खातिर, परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे यीशु की बलि चढ़ा दी।

हमारी धार्मिकता और आत्मरिक्ता को बरकरार रखने के लिए हमें किस तरह के जीवन की आवश्यकता है? हमारे जीवन को अपवित्र करने के लिए इस दुनिया में कई चीजें हैं, हम उन्हें अपने जीवन में प्रवेश करने नहीं दे सकते हैं। जिस तरह हम नहीं जानते कि आदम और हव्वा में किस तरह से आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस प्रवेश हुआ, उसी तरह हम कभी नहीं जान पाएंगे कि इस दुनिया के कुछ गुण कैसे हमारे अंदर प्रवेश करेंगे और हमें अपवित्र करेंगे। आइए पढ़ते है मरकुस 7: 21– 23 ''21 क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से, बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार। 22 चोरी, हत्या, पर स्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। 23 ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।'' यहां हमने पढ़ा है कि उपरोक्त सभी गुण हैं जो हमें अपवित्र कर सकते हैं। लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि प्रभु ने हमारे लिए अपना जीवन क्रूस पर दिया है और हमें इन चीजों से अलग कर दिया है और प्रभु ने हमें धार्मिकता का जीवन दिया है। इस प्रकार, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शत्रु आत्मरिक्ता, अनुग्रह और धार्मिकता के कपड़ों को हमसे दूर न ले जाए। जब हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, तो हम अपने जीवन से आत्मरिक्ता, अनुग्रह और धार्मिकता को खो देते हैं। उपरोक्त सभी चीजें हमारे भीतर से आती हैं और इस प्रकार प्रभु और हमारे बीच पर्दा बन जाता हैं। हमारे जीवन में शत्रु का काम हमें प्रभु से दूर ले जाना है। शत्रु हमें परमेश्वर से छुपाने और खुद को उनसे दूर रखने का रास्ता बनाता है। जब प्रभु दुनिया का न्याय करने के लिए लौटेंगे, शत्रु हमें परमेश्वर के सामने सक्षम खड़े होने के लिए अयोग्य बनाता है। गुण जैसे की .. व्यभिचार, कुमारीगमन, हत्या, चोरी, लोभ, दुष्टता, धोखा, निन्दा, अभिमान, अहंकार आदि, ये सभी गुण हमारे भीतर ही निर्मित होते हैं, और हमारे जीवन को अपवित्र करते हैं। हम इसे किसी भी दुकान से नहीं खरीद सकते है। इनमें से कोई भी गुण हमें प्रभु के सामने खड़े होने के योग्य नहीं बनाएगा। ये प्रभु के लिए एक घृणा हैं। याद रखें, ये सभी गुण हमारे भीतर ही उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, हमें अपने दिलों को प्रभु के प्रेम से भरना चाहिए, न कि उसे व्यर्थ गुणों से। प्रभु का बलिदान और हमारे लिए उनका प्यार, हमारे दिलों में भरना चाहिए न की इन गुणों से। हमें अपने ह्रदय में ही परमेश्वर के साथ एक सहमति करना चाहिए। हमें वचन एक कान से सुनकर और इसे दूसरे कान से बाहर जाने नहीं देना चाहिए, बल्कि हमें अपने ह्रदय को परमेश्वर के वचन से भरना चाहिए, यह हमारे लिए एक भंडार घर होना चाहिए। इस प्रकार, परमेश्वर का प्रत्येक वचन जो हम सुनते हैं, हमें उसे अपने ह्रदय में इकट्ठा करके रखना चाहिए और फिर उसे अपने जीवन में उपयोग करना चाहिए। हमारा जीवन व्यर्थ होगा, अगर हम उस वचन के साथ नहीं बदलते हैं जो हम सुनते हैं। क्योंकि प्रत्येक वचन जो प्रचार होता है वह परमेश्वर के सिंहासन से है। हमें गाय के जैसे पदार्थ चबाना चाहिए। हमें अपने जीवन में वचन को अच्छी तरह से मंथन करना चाहिए और प्रभु के लिए फल देने वाला वृक्ष होना चाहिए। प्रभु ने अपने जीवन को क्रूस पर दिया है, ताकि प्रभु की धार्मिकता के साथ हमारी नग्नता को ढंका जा सके। दानिय्येल ने भी एक सहमति किया था, इससे पहले कि वह बाबुल जाए, उसने खुद के साथ यह सहमति कि, की वह कुछ भी अशुद्ध के साथ अपने जीवन को अशुद्ध नहीं करेगा। उसने परमेश्वर के साथ यह सहमति की। इस वजह से, उसका जीवन धन्य और सफल रहा। आइए हम

पढ़ते हैं दानिय्येल 6: 28 ''और दानिय्येल, दारा और कुस्रू फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान् रहा।'' इस प्रकार, इन दोनों राज्यों के शासनकाल के दौरान, दानिय्येल का जीवन समृद्ध हुआ। इसी तरह, हमारा जीवन भी धन्य हो सकता है जब हम प्रभु की इच्छा और आज्ञा के अनुसार अपना जीवन जीते हैं। इस प्रकार, प्रभु हमारे बीच में निवास करेंगे और हमारे हाथों के हर काम को समृद्ध करेंगे। हमें यह कभी भी पता नहीं चलेगा कि कब हम धार्मिकता के वस्त्र खो सकते हैं। पवित्र शास्त्र में, हम शिमशोन के जीवन को जानते हैं, उसने यह महसूस ही नहीं किया कि कब प्रभु की कृपा ने उसे छोड़ दिया था और कब वह शक्तिहीन हो गया। लेकिन जब वह अपने दुश्मन से लड़ने के लिए खड़ा हुआ, तो उसने महसूस किया कि वह बहुत समय पहले ही शक्तिहीन हो गया था। इसी तरह, हमारे जीवन में भी हमें हर समय सावधान और सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि, प्रभु आधी रात में चोर 5की तरह आएंगे। यदि परमेश्वर हमें उनके आने की सूचना देंगे, तो हम केवल प्रार्थना करने, वचन पढ़ने और उसकी प्रशंसा करने का ढोंग करेंगे। हममें से कई लोग ऐसा करते हैं कि हम खुद को संतुष्ट कर सकें। लेकिन याद रखें कि हमारे प्रभु को हमारे गाने से, स्तुति करने से संतुष्ट होना चाहिए, और हमारे प्रार्थना उनके राज्य में एक मीठी सुगंध होना चाहिए। जब हमारा दिल शुद्ध होगा और उपरोक्त किसी भी बुरे गुण के बिना होगा, तो प्रभु हमारी प्रार्थना को और प्रशंसा को स्वीकार करेंगे और यह उनकी दृष्टि में मनभावना होगा। जिन लोगों के दिलों के भीतर उपरोक्त बुरे गुण हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि, प्रभु ऐसे दिल से किसी भी प्रशंसा और प्रार्थना को स्वीकार नहीं करेंगे। यह प्रभु की दृष्टि में अशुद्ध है। प्रभु हमसे कहते हैं ''मेरे नाम से मांगो और यह तुम्हारे लिए दिया जाएगा''। लेकिन, हमें प्रभु के नाम से मांगने के लिए, हमें दिल से शुद्ध होना चाहिए। हजारों लोग प्रभु से प्रार्थना करते हैं और उससे मांगते हैं, लेकिन जब हमारे दिल में ईर्ष्या, घमंड, गर्व, अहंकार, रवैया होता है, तो प्रभु हमारी प्रार्थनाओं का जवाब कैसे दे सकते है? हमारे दिलों में इन सब अपवित्र गुणों को रखकर प्रभु का नाम पुकारना व्यर्थ है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम कभी भी नग्न न हों, प्रभु ने हमें धार्मिकता के वस्त्र आसानी से नहीं दिए, इसके लिए, उन्होंने क्रूस पर हमारे लिए अपना बहुमूल्य जीवन बलिदान कर दिया।

जब हम यहोवा के साथ एक सहमति करते हैं, तो वह हमारा सच्चा प्रभु है जो हमारे जीवन में सभी चीजों को करने में सक्षम है। यहूदा 1: 24 ''अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।'' हमें हर दिन अपने आप को उसके हाथों में सौंपना चाहिए और प्रभु से हमारा नेतृत्व करने और मार्गदर्शन करने के लिए कहना चाहिए। परमेश्वर हमें गिरने से बचाएगा, वह हमारी रक्षा करेगा और हमें उनके पिता परमेश्वर के सामने दोषरहित करेंगे । हमारा प्रभु पवित्र प्रभु है और वह चाहता है कि हम भी पवित्र हों। हमारे प्रभु में कभी अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या, रवैया नहीं था। उनके पास कभी भी उनके भीतर ऐसी गंदी गुणवत्ता नहीं थी। जब हम शुद्ध मन से प्रभु के पास जाते हैं, तो वह हमें आशीर्वाद देंगे। हमें अपने दिलों की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि इससे जीवित जल का प्रवाह होगा। आइए हम पढ़ते हैं नीतिवचन 4: 23 '' सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।'' जब हमारा दिल गंदे गुणों से भरा होगा, तो इससे केवल जीवन के मुद्दे ही

निकलेंगे। प्रभु हम में से प्रत्येक से एक शुद्ध दिल चाहते है। हमें अपने दिलों की अच्छी देखभाल करनी चाहिए और इसे इन सभी गुणों के साथ अपवित्र नहीं होने देना चाहिए। भजन संहिता 34 : 13 ''अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले।'' हमारे दिल में जो भी होता है, वह हमारे मुंह से निकलता है। पवित्र शास्त्र में हम मरियम की कहानी जानते हैं कि उसने अपने भाई मूसा के खिलाफ कैसे बात की थी। लेकिन प्रभु का क्रोध तुरंत उस पर हावी हो गया और उसे कुष्ठ रोग हो गया। नीतिवचन 18: 21 कहता है ''जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।'' हमारे जीभ में से जीवन और मृत्यु दोनों आते हैं। हम अपनी जीभ को कैसे नियंत्रित कर सकते हैं और इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं, हमारे जीवन में क्या बहुत महत्वपूर्ण है? अगर हम अपनी जीभ का इस्तेमाल अच्छे तरीके से करेंगे तो हम बहुत कुछ हासिल करेंगे। जबकि अगर हम अपनी जीभ का गलत इस्तेमाल करेंगे, तो यह हमारे जीवन को नष्ट कर सकती है। मरियम के मन में ईर्ष्या थी और इस वजह से उसने कहा ''क्या प्रभु केवल मूसा से बात करते है, वह हमसे भी बात करते है''। इस प्रकार प्रभु का क्रोध तुरंत उस पर आ गया। हमें अपने जीवन में अपने भीतर मौजूद सभी नकारात्मकता और गंदे गुणों को दूर करने की दिशा में काम करना चाहिए, तभी हम धन्य होंगे। यह हमारे हाथ में है, हम अपने जीवन में किस गुणवत्ता की अनुमति देते हैं। परमेश्वर ने पहले से ही अपने जीवन को हमारे लिए एक जीवित बलिदान के रूप में दिया है और हमें धार्मिकता के कपड़े पहनाए हैं। लेकिन, शत्रु हमें प्रभु के सामने नंगा करना चाहता है, वह हमें ऐसे या वैसे किसी भी द्वारा प्रभु के स्वर्गीय राज्य तक पहुंचने नहीं देना चाहता है। इस प्रकार, शत्रु हमारे दिल को सभी नकारात्मक गुणों से भर देता है। जैसे अभिमान, ईर्ष्या, अहंकार, क्रोध और पापी विचारों के साथ। वचन कहता है ''जिस तरह से हम अपनी जीभ का उपयोग करेंगे, हम उसी के अनुसार इनाम प्राप्त करेंगे''।

बाइबल में, हमने नाबाल की कहानी पढ़ी है। जब वह मुसीबत में था, दाऊद ने उसकी मदद की। अपने जीवन में दाऊद की मदद के कारण, नाबाल समृद्ध और अमीर बन गया। वह इतना शक्तिशाली हो गया कि कोई भी उसकी भेड़ों को लूट नहीं सकता। उसके पास अपने जानवरों को चराने के लिए अच्छे चारागाह थे क्योंकि दाऊद ने उसे रहने के लिए एक अच्छी जगह दी थी। नाबाल बहुत अमीर और जानवरों के विशाल झुंड का मालिक बन गया। एक बार दाऊद के जीवन में एक समय आया जब उसे नाबाल की मदद की आवश्यकता थी। वह मदद के लिए अनुरोध के साथ अपने लोगों को नाबाल के पास भेजता है। दाऊद ने सोचा कि नाबाल के प्रति उसके मन में धन्यवाद का भाव होगा और वह निश्चित रूप से उसकी मदद करने के लिए आगे आएगा। लेकिन, जब दाऊद के लोग मदद के लिए नाबाल के पास गए, तो वह उन पर चिल्लाया और उनसे पूछा ''दाऊद कौन है जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है? मुझे उसकी मदद क्यों करनी चाहिए?'' नाबाल ने दाऊद के लोगों को चले जाने के लिए कहा। लेकिन, नाबाल का नौकर तुरंत जाता हैं और नाबाल की पत्नी अबीगैल को घटना से संबंधित बातें बताता हैं। वे उसे याद दिलाते हैं कि दाऊद ने नाबाल की कैसे मदद की थी और दाऊद की मदद के कारण वे कैसे समृद्ध हुए थे। तुरंत, अबीगैल, वह सब ले गई जो उसके पास था और दाऊद के पास जाती है, वह उसके पैरों पर

गिरती है और अपने पति के व्यवहार के लिए माफी मांगती है। जब अबीगैल घर लौटी, तो उसने देखा कि नाबाल अपने दोस्तों के साथ दावत कर रहा था, शराब के नशे में था और खुद भी मज़े कर रहा था। फिर उसने फैसला किया कि उसे कुछ भी बताने का सही समय नहीं है। अगले दिन अपने अत्यधिक नशे के बाद, अबीगैल ने नाबाल को वह सब बताया जो उसने किया था। नाबाल के दिल की धड़कन तुरंत रुक गई, जिसका अर्थ है कि वह आत्मारिक रूप से मर गया। हालांकि वास्तव में वह दस दिनों के बाद मर गया। हम में से बहुत से लोग अपने जीवन में प्रभु के प्यार को भूल जाते हैं और हम प्रभु और प्रभु के काम के खिलाफ बोलते हैं। हमारे दिल की धड़कन भी तुरंत रुक सकती है, हालांकि हम तुरंत मर सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु हमें अंत तक प्यार करते हैं, लेकिन जब हमारे भीतर ऐसी कोई नकारात्मक गुण होती है, तो शत्रु हमारे धार्मिकता के कपड़े लुटता है। हमें कभी भी घमंडी और जिद्दी नहीं होना चाहिए, हम कभी नहीं जान पाएंगे कि कब हमारा दिल धड़कना बंद हो जाएगा और कब हम प्रभु से अलग हो गए। इस प्रकार, प्रभु ने हमें चेतावनी दी है कि ''मैं आधी रात में एक चोर के रूप में आऊंगा''। इस प्रकार, हमारे सभी गुण उनके सामने होंगे और प्रभु हमारे सच्चे वक्तित्व को देखेंगे। आइए हम पढ़ते है 1 शमूएल 25: 36–38 ''36 तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई; और क्या देखती है, कि वह घर में राजा की सी जेवनार कर रहा है। और नाबाल का मन मगन है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिये उसने भोर के उजियाले होने से पहिले उस से कुछ भी न कहा। 37 बिहान को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे कुल हाल सुना दिया, तब उसके मन का हियाव जाता रहा, और वह पत्थर सा सुन्न हो गया। 38 और दस दिन के पश्चात यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया।'' अगली सुबह जब नाबाल का नशा उतर गया, तो उसकी पत्नी अबीगैल ने उसे बताया कि उसने दाऊद के साथ क्या किया। तुरंत उसका दिल उसके भीतर मर गया और वह पत्थर की तरह हो गया। हमें याद रखना चाहिए कि, 'प्रभु के साथ एक दिन, हमारे जीवन के एक हजार दिनों के बराबर है'। नाबाल के गर्व, घमंड और अहंकार के कारण, उसने चर्बीवाले जानवर को खाया और शराब पी। इन सब चीज़ों ने उसके दिल को फूला दिया और वह अपने जीवन में दाऊद की भलाई को भूल गया। इस प्रकार, प्रभु का क्रोध तुरंत उस पर आ गया, हालांकि वह केवल दस दिन बाद मर गया। हाँ, यह हमारे दिल में ही है कि ये सभी गुण बनते हैं और फिर हम अपने भीतर प्रभु के प्रेम को भूल जाते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे लिए शांति से रहना के लिए, प्रभु ने इस संसार की सारी लज्जा को अपने ऊपर ले लिया और कलवारी के क्रूस पर सारे दुःख और दर्द को ले लिया, उनके शरीर को तोड़ दिया और हमें उनका लहू दिया, इस प्रकार हमें धार्मिकता का वस्त्र दिया। हमें इस कपडे की सुरक्षा करनी चाहिए।

आइए हम फिर से पढ़ते हैं नीतिवचन 18: 21 ''जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।'' हमारे कानों को केवल प्रभु के प्रति झुकाव होना चाहिए, और हमें उनके रास्तों पर चलना चाहिए तभी हम उनकी कृपा प्राप्त करेंगे। प्रभु हमें जो सिखाते है, उसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए, हमें कभी शर्मिंदा नहीं होना चाहिए। जब हम आशा करते हैं और चाहते हैं, तो प्रभु हमें आशीर्वाद देंगे, जब हम उनके वचन के प्रति

आज्ञाकारी होंगे। आइए हम पढ़ते हैं भजन संहिता 1: 3 ''वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।'' जब हम प्रभु के प्रेम को नहीं भूलते हैं तो हम जो भी चाहते हैं, प्रभु हमें उसका आशीर्वाद देंगे। हमें प्रभु के नाम से मांगने के लिए योग्य होना चाहिए। जब हम एक सभा या परिवार या एक समाज में प्रभु के साथ एकता और ऐक्य में होते हैं, तो हम अपने जीवन में हर लड़ाई जीत सकते हैं। हम जानते हैं कि प्रभु ने ल्यूसिफर को स्वर्ग में बहुत अधिकार दिए थे, लेकिन जब ल्यूसिफर में गर्व समां गया, तो परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से इस पृथ्वी पर लात मारकर गिरा दिया। इस प्रकार, हमें अपने भीतर कभी भी अभिमान नहीं आने देना चाहिए। हमें अपने बुलावे पर हमेशा विनम्र रहना चाहिए। हमारा बुलावा क्या है? इफिसियों 2: 6 ''और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।'' परमेश्वर ने हमें स्वर्ग में उनके साथ रहने के लिए बुलाया है। इस दुनिया में, हम अपने चारों ओर अविश्वास, कृतघ्नता, अधर्म देखते हैं। जब प्रभु किसी को छूते है तो एक आदमी रातोंरात नहीं बदल सकता है, उसके जीवन में बदलाव धीरे–धीरे लाया जाता है। प्रभु का अभिषेक अपने जीवन में धीरे–धीरे लेकिन बराबर से बदलाव लाता है। हम मनुष्यों के जीवन में कोई बदलाव नहीं ला सकते हैं केवल प्रभु ही पत्थर के हृदय को निकालके और उसके भीतर मांस का हृदय डाल सकते हैं। हमारा प्रभु एक सज्जन व्यक्ति है, वह कभी भी खुद को हमारे जीवन में जबरदस्ती नहीं लाते है। वह हमारे दरवाजे पर खड़े है और दस्तक देते है, जब तक हम भीतर से दरवाजा नहीं खोलते, वह कभी भी हमारे जीवन में खुद को जबरदस्ती से प्रवेश नहीं करेंगे। हमारा जीवन एक अभिशाप है, लेकिन यह प्रभु ही है जो इस अभिशाप को एक आशीर्वाद में बदल सकते है। व्यवस्थाविवरण 23: 5 ''परन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की ना सुनी; किन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उसके शाप को आशीष से पलट दिया, इसलिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था।'' हमारा परमेश्वर हमसे प्रेम करते है, इस प्रकार वह शापग्रस्त हो गए और उन्होंने हमारा शाप ले लिया। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम कितना पवित्र और पूर्ण है? हमें इससे समझना चाहिए। गलतियों 3: 13 ''मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है।''

इसलिए हमें धार्मिकता के कपड़ों का बहुत ध्यान रखना चाहिए, जो प्रभु ने हमें दिए है। हमें भीतर से कितना शुद्ध होना चाहिए, हमें इस बात का कितना ध्यान रखना चाहिए कि जो हमारे मुंह से निकलता है वह शुद्ध और पवित्र होना चाहिए? हमारा प्रभु हमसे बहुत प्यार करते है। आइए हम विचार करें और देखें कि क्या आज हमारा हृदय शुद्ध है? यदि यह है, तो इसमें से जीवित जल की नदियाँ बहेंगी। लेकिन, अगर हमारा दिल प्रभु की कृपा और प्यार को भूल जाता है, तो हम एहसान फरामोश हो जाएंगे और हमारा दिल नाबाल के दिल की तरह पत्थर दिल बन जाएगा और हम आत्मारिक रूप से मर जाएंगे। फिर एक दिन, प्रभु का शक्तिशाली हाथ हम पर पड़ेगा और हम शारीरिक रूप से मर जाएंगे। क्योंकि हमारे जीवन में प्रभु का प्रेम कोई साधारण प्रेम नहीं है, क्रूस पर उनका जीवन परमेश्वर द्वारा हमारे लिए दिया गया कोई साधारण मूल्य नहीं है। हमें अपने जीवन में इस प्यार को हमेशा महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। जब हम क्रूस को देखते हैं, तो हमें

उसका प्रेम अवश्य देखना चाहिए, हमें उस अभिषेक को देखना चाहिए जो पिता परमेश्वर ने उन्हें दिया है। हमें अपने दिल में इन सभी चीजों को अपने पास रखना चाहिए यानी भंडार घर में। समय–समय पर हमें अपने लिए प्रभु के इस प्रेम को याद रखना चाहिए और इस तरह हमारी हर लड़ाई लड़नी चाहिए। हमारा प्रभु एक अच्छा प्रभु है। हम जानते हैं कि शत्रु पराक्रमी है लेकिन हमारा प्रभु सर्वशक्तिमान है। हम जानते हैं कि फिरौन के आगे मिस्र की भूमि में मूसा द्वारा किए गए चमत्कार भी मिस्र के जादूगरों द्वारा किए गए थे। उन्होंने अलग–अलग तरीकों से मूसा की नकल की। लेकिन अंत में जीत प्रभु की अकेले की हुई। हम जानते हैं कि जब मूसा ने छड़ी को साँप में बदल दिया, तो जादूगरों ने भी ऐसा ही किया, लेकिन अंत में मूसा के साँप ने जादूगरों के साँपों को खा लिया। निर्गमन 9: 8–11 ''8 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, कि तुम दोनों भट्टी में से एक एक मुट्ठी राख ले लो, और मूसा उसे फिरौन के सामने आकाश की ओर उड़ा दे। 9 तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन जाएगी। 10 सो वे भट्टी में की राख लेकर फिरौन के सामने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई। 11 और उन फोड़ोंके कारण जादूगर मूसा के सामने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्रियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे।'' यहाँ हम देखते हैं कि जब मूसा और हारून ने भट्टी की राख ली और उसे हवा में फेंक दिया और जो भी राख गिर गई, उनकी त्वचा पर फफोले की तरह फोड़े उठे। यह जादूगरों को भी सजा मिली। अंत में, जादूगरों ने फिरौन से क्या कहा? निर्गमन 8: 19 ''तब जादूगरोंने फिरौन से कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है। तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फिरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हारून की बात न मानी।'' जादूगरों ने फिरौन से कहा कि ''हम उस पर प्रभु का हाथ देखते हैं'' जो कुछ भी मूसा ने किया वह जादूगरों ने भी किया, लेकिन अंत में जादूगरों को एहसास हुआ कि 'प्रभु का हाथ' इस्राएलियों पर था। लेकिन फिरौन का दिल कठोर हो गया क्योंकि परमेश्वर ने फिरौन के दिल को सख्त कर दिया था। परमेश्वर फिरौन को पूरी तरह से नष्ट करना चाहते थे, इसलिए परमेश्वर ने फिरौन के दिल को कठोर कर दिया।

जब हम अपने दिलों को कठोर करते हैं, तब भी हमें यह जाँचना चाहिए कि हमारा हृदय कठोर क्यों है? हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, और पूछना चाहिए कि हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? हमें खुद की जाँच करनी चाहिए और अपने जीवन की जाँच करनी चाहिए। हमें अपने भीतर से अविश्वास के हृदय को बदलने के लिए प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रभु से माँगना चाहिए कि हमारे पत्थर दिल को हटा दें और मांस का दिल डाल दें। हमें अपने दिल में अच्छी चीजों को बसने देना चाहिए। अगर हम अंत तक अच्छे विश्वास में रहेंगे, तो हम जीवन का ताज जीत सकते हैं। आइए हम पढ़ते हैं लूका 11: 20 ''परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा।'' यीशु कहते हैं, ''प्रभु के हाथ से, मैंने राक्षसों को निकाल दिया''। यह वही हाथ है जिसे मिस्र के जादूगरों ने भी देखा था और वे जानते थे कि यह शक्तिशाली है। वही शक्तिशाली हाथ जो मिस्र के जादूगरों पर गिरा, हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि यह कभी भी हम पर न पड़े। हमें अपने ऊपर प्रभु के प्रेम को कभी नहीं भूलना

चाहिए। हमें प्रभु के आगे हमेशा विनम्र रहना चाहिए। जब हम कुछ भी नहीं थे और हमारे पास कुछ भी नहीं था तो हम उनके चरणों में रोए थे और खुद को दीन बनाया। इसी तरह, आज जब हमारे पास सब कुछ है तो हमें विनम्र रहना चाहिए और अपने जीवन में उनकी कृपा को नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने जीवन के शुरुआती दिनों को कभी नहीं भूलना चाहिए, हमने उनसे कई चीजें मांगी थीं और उन्होंने हमें सब कुछ दिया था। क्या कोई है जिसे प्रभु से कुछ नहीं मिला? हम सब ने प्रभु से माँगा है और उनसे प्राप्त किया है। हमें आत्मारिक रूप से कभी नहीं मरना चाहिए।

इस प्रकार, हर दिन हमें अपने जीवन में प्रभु के अच्छे कार्यों को याद करना चाहिए और उनके सामने विनम्र होना चाहिए। हमारे जीवन में प्रभु का आशीर्वाद एक दिन के लिए नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए है। यह संदेश कई लोगों के लिए एक आशीर्वाद हो। प्रभु की स्तुति हो !